''जलाए रखें नैतिक मूल्यों की मशाल - लोढा''

राश्ट्रीय अणुव्रत लेखक सम्मेलन का समापन

लाडनूं 15 अक्टूबर, 2009।

पश्चिमी देशों द्वारा दिये गये बाजारवाद को टी.वी. ने ग्राम तक पहुंचा दिया और गांव के लोगों के मन-मस्तिष्क को बदल डाला। आज मीडिया के प्रभाव से समूचे समाज की मानसिकता बदल रही है। इसे वापस बदलने का काम बहुत मुश्किल है। आज हर चीज व्यावसायिक हो गई है, जिससे नैतिकता का वचन ग्रहण करने वाले ही वचन भंग भी कर रहे हैं। फिर भी समाज में परिवर्तन लाने की सोच को समाप्त नहीं किया जाना चाहिए। नैतिक मूल्यों की लौ का जलाएं रखना जरूरी है। हम हर आगामी पीढी को ऐसी मशाल सौंपे, जो जलती हुई हो। अगली पीढी तक मशाल बुझने न पाए, यह ध्यान रखना है। हालांकि प्रत्येक सामाजिक बुराई के पनपने पर उसके सुधार के लिए भी आवाज उठती है। हम पूरे जहर को मिटाकर अमृत में नहीं बदल सकते परन्तु जहर के असर को जितना कम कर सकें, उतना ठीक है। ई.टी.वी. राजस्थान के समाचार विश्लेशक अनिल लोढा ने यहां जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के सेमिनार हॉल में राष्ट्रीय अणुव्रत लेखक सम्मेलन के समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए ये शब्द कहे। मुख्य अतिथि की हैसियत से बोलते हुए उन्होंने कहा कि आज मीडिया में मानवीय संवेदनाएं समाप्त हो रही हैं। न्यूज चैनल अपनी टी.पी.आर. बढाने के लिए दर्शकों को बांधने का बन्दोबस्त करता है। दर्शक अपना रिमोट के बटन से चैनल नहीं बदल पाए, इसका ध्यान रखा जाता है तो दैनिक समाचार पत्र भी मानवीय संवेदना के समाचारों के बजाये विज्ञापनदाताओं के हित के समाचारों को लीड न्यूज बनाने के प्रयास करते हैं। ऐसे दौर में जब सब बाजारवाद की चपेट में हैं तो समाजिक परिवर्तन के संवेदनायुक्त लेखन को स्थान तक मिलना मुश्किल है। उन्होंने कहा कि आज जीवन में तेजी आई है, गतिविधियों का स्तर बढ़ा है। ऐसे में नई पीढ़ी हमारी बातें गले नहीं उतार पाती। इसलिए नई पीढी को अपना रास्ता खुद तय करने दें, चाहे वह खुद भुगत कर करे। हम सिर्फ उसके लिए मार्गदर्शन करें, अपने अनुभवों का आभास करवाकर चेताते रहें। संचार क्रांति ने नई हवा और नया दौर पैदा किया है, जिससे मानवीय मूल्यों में परिवर्तन आया है, समाज की सोच बदली है। हम उसे सहजता से मोड़ देने का प्रयास कर रहे हैं।

अणुव्रत आंदोलन के राश्ट्रीय प्रभारी मुनि सुखलालजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रिंट मीडिया भी आज व्यवसाय बन चुका है। सब विज्ञानों के आधार पर चलते हैं। ऐसे में लेखकों-पत्रकारों को भी संयम अपनाने की आवश्यकता है। अणुव्रत प्रेरणा पाथेय प्रदान करता हैं इसलिए ''संयम खलु जीवनम्'' को अपना ध्येय वाक्य बनाकर चलें। यह उद्घोश अच्छी राह दिखाने का काम करेगा। उन्होंने धर्म और सम्प्रदाय के बारे में बताया कि धर्म तो रस है और सम्प्रदाय छिलका है। छिलकों के बिना रस को बांधकर नहीं रखा जा सकता, इसलिए छिलका निरर्थक नहीं है, परन्तु केवल छिलका पकड़कर रख लिया और रस को ग्रहण नहीं किया तो सब व्यर्थ हो जाएगा। उन्होंने हिंसा व पर्यावरण के संकट में अणुव्रत लेखन में गति देना जरूरी बताया।

मुनि मोहजीत कुमार ने इस अवसर पर कहा कि जिनके हाथ में कलम की पतवार है, वह समस्याओं के समुद्र को पार करने का मादा रखते हैं। उन्होंने लेखकीय पैनी धार को सुदृढ़ बनाकर स्वतंत्र, विचार व भावधारा के

माध्यम से जन-जन के मन में नैतिक मूल्यों को उतारने की जरूरत बताई। उन्होंने कहा कि हिंसा को ललकारने की जरूरत नहीं है, अपने भीतर की संवेदना को जगाकर, अहिंसा के भावों को जगाकर जीवन के प्रकाश और विश्वास पैदा किया जा सकता है। अणुव्रत लेखक मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ने सम्मेलन के सातों सत्रों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया तथा नैतिक पराभव की स्थिति में एक आशा की किरण के रूप में अणुव्रत को परिभाषित किया। समारोह के विशिष्ट अतिथि जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के डॉ. जे.पी.एन मिश्रा ने लेखकीय दायित्व को कठित बताते हुए कहा कि वह उसी समाज में रहकर उसके सुधार की बात करता है। आज सामाजिक मूल्यों के ह्रास की स्थिति को रोकने में लेखक-पत्रकार ही सहायक सिद्ध हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि हर आन्दोलन की सफलता के पीछे पत्रकार व लेखक अवश्य होते हैं।

अणुव्रत समिति के मंत्री व सम्मेलन के संयोजक डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने तीन सूत्रीय प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। अणुव्रत पाक्षिक पत्रिका के संपादक डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने विषय प्रस्तुति की तथा लेखकों-पत्रकारों को पीत पत्रकारिता से हटने व मीडिया में आए भ्रष्टाचार को मिटाने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखकर व्यवहार-शुद्धि के लिए अणुव्रत अपनाया जाना जरूरी है। उन्होंनें हिन्दी भाषा में अंग्रेजी वाक्यों व शब्दों के समावेश को अनुचित बताते हुए भारतीय भाषाओं के प्रयोग पर जोर दिया।

सम्मेलन का एक सत्र अणुव्रत लेखन और व्यक्तित्व निर्माण विषय पर भी आयोजित किया गया, जिसमें मुनिश्री मदनकुमारजी के सान्निध्य में व प्रो. नन्दलाल कल्ला की अध्यक्षता में डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ने विषय प्रस्तुति की। इस सत्र के विशिष्ट अतिथि दयानन्दविश्वविद्यालय के प्रो. एस.पी. दुबे व डॉ. महेन्द्र कर्णावट थे। स्थानीय अणुव्रत समिति के अध्यक्ष ओमप्रकाश सोनी, सतीश साथी, जगदीश यायावर, डॉ. प्रद्युम्न शाह, सत्यनारायण 'सत्य', शम्भुदायाल पांडे, बिरदीचंदशर्मा, राकेशमणी त्रिपाठी, डॉ. सूरज राव व राष्ट्र बन्धु ने विचार प्रस्तुत किये। संयोजन आलोक खटेड़ ने किया। रात्रि में कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। राष्ट्रबन्धु की अध्यक्षता, प्रो. नन्दलाल कल्ला के मुख्य आतिथ्य तथा मदन केवलिया व डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी के विशिष्ट आतिथ्य में दीनदयाल शर्मा, जीतमल टाक 'जीत', यासीन खां, 'अख्तर', दुर्गाशंकर यादव, शंकरसिंह राजपुरोहित, फतेहलाल गुर्जर, रमणीकात दिल्ली, राजेन्द्र स्वर्णकार, धर्मचन्द अन्जाना, सतीशकुमार सत्य, रजनीरमल मिश्रा, एल.के. दाधीच, पारस कुमार वन्दना, बंशीलाल पारख, श्रवणकुमार वर्मा, मदन मोहन, नेपाल पवन गंग आदि ने कविता पाठ किया। संयोजन प्रख्यात कवि गजादान चारण ने किया। अणुव्रत लेखक संगोष्ठी के आयोजन में संरक्षक विजयसिंह बरमेचा, ओमप्रकाश सोनी, कार्यक्रम संयोजक डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी एवं सीताराम टेलर का विशेष योगदान रहा।